शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों का प्रपत्ति भाव

डॉ० मीनू अवस्थी

सहा० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, वाराणसी

www.shodh.net

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों का प्रपत्ति भाव

डॉ० मीनू अवस्थी

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल (संवत् 1700 से 1900 तक) में श्रृंगारिक काव्य के साथ वीरकाव्य, सूफीकाव्य, भक्ति काव्य, नीति और विनोदकाव्य का भी सृजन होता रहा। इस काल के कवियों पर भी तत्कालीन राजनीतिक समसामयिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। हिन्दी भाषी प्रदेशों में चौदहवीं शती तक जिस साहित्य की सर्जना होती रही, उसमें प्रमुख रूप से दो प्रकार का साहित्य मिलता है- एक तो पूर्वी प्रदेशों की सहजयानी तथा नाथ पंथी रचनाएँ और दूसरे, पश्चिमी प्रदेशों की नीतिपरक, श्रृंगारपरक तथा आख्यानयुक्त रचनाएँ। इन दोनों प्रकार की रचनाओं के सम्मिलित प्रभाव से दक्षिण के आलवारों का भक्तिवाद उत्तर भारत की धर्मप्राण जनता की हृदयभूमि में अवतार-भावना के रूप में पल्लवित हुआ। ईसा की बारहवीं शती से पंद्रहवीं शती तक सूफी सम्प्रदायों का प्रेमतत्त्व भी भारतीय-धर्म जिज्ञासुओं को आकृष्ट कर चुका था। सूफी संतों ने भारत की प्रचलित लोक कथाओं का सहारा लेकर अपने प्रेमतत्त्वपरक आध्यात्मिक विचार काव्य के माध्यम से सुनाने प्रारम्भ कर दिये थे। साहित्य के क्षेत्र में इसका परिणाम यह हुआ कि भक्तिकाल के अनन्तर रीतिकाल में भी संतकाव्य, सूफीकाव्य, रामकाव्य और कृष्णकाव्य की रचना होती रही।[1]

रीतिकाल के संतों ने अपनी विचारधारा का प्रचार पूर्व मध्य युग के संतों की भाँति किया और इसके लिए साहित्य का अवलंबन लिया। यही कारण है इनमें काव्यात्मकता कम प्रचारात्मकता अधिक है। रीतिकालीन मुस्लिम कवियों में मुबारक, रसलीन, ताज (कवयित्री), आलम, अब्दुल जलील, शेख निसार, दरिया साहब (बिहार), दरिया साहब (मारवाड़), यारी साहब, नूर मुहम्मद, याकूब खाँ, इंशा अल्ला खाँ, 'इंशा' प्रमुख हैं। उपर्युक्त कवियों में दरिया साहब (बिहार वाले), दरिया साहब (मारवाड़ वाले), यारी साहब आदि कवियों ने 'राम' को अपने काव्य का विषय बनाया और रामभक्ति का प्रचार-प्रसार किया। इनका राम परमात्मा, निर्गुण, निराकार ज्योति स्वरूप है। दरिया साहब (बिहार वाले)का जन्म संवत् 1731 शाके 1566 सन् ईसवी 1674 में हुआ था।[2] इन्हें 'बिहार के कबीर' की संज्ञा से विभूषित किया जाता है जैसा कि इस साखी से संकेत मिलता है- 'कथा कबीर करहिं जग फेरा'।[3] दरिया साहब की रचनाओं में- 'अग्रज्ञान', 'अमर सार', 'भक्ति हेतु', 'ब्रह्म चैतन्य', 'ब्रह्म विवेक', 'दरियानामा', 'दरिया सागर', 'गणेश गोष्ठी', 'ज्ञान दीपक', 'ज्ञान मूल', 'ज्ञान रत्न', 'ज्ञान स्वरोदय', 'काल चरित्र', 'मूर्ति उखाड़े', 'निर्भय ज्ञान', 'प्रेम मूल', 'शब्द या बीजक', 'सहसरानी', 'विवेक सागर' और 'यज्ञ समाधि' हैं। दरिया साहब की रचनाओं का प्रतिपाद्य है - ईश्वर, आत्मा, शरीर, पुनर्जन्म, माया, कर्म सिद्धांत, सृष्टि रचना, स्वर्ग, योग, भक्ति, संत, सद्गुरू की उपासना आदि।

दरिया साहब (मारवाड़ वाले) का जन्म संवत् 1733 माना गया है।[4] इनकी रचनाओं का पता नहीं चलता। इनकी वाणी की संख्या 10,000 कही जाती है।[5] दरिया साहब की रचनाओं का एक संक्षिप्त संग्रह- 'दरिया साहब मारवाड़ वाले की बानी' है जो बेलवेडियर प्रेस से प्रकाशित हुआ था।[6]

यारी साहब की 'रत्नावली' में यारी साहब का जन्म समय वि0 सं0 1725 और 1780 के बीच माना गया है।[7] परशुराम चतुर्वेदी ने इनका आविर्भाव का समय विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना है।[8] यारी साहब की एकमात्र रचना 'यारी साहब की रत्नावली' मानी गई है जिसका प्रकाशन बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से हुआ है।

इस प्रकार रीतिकाल के मुस्लिम रामभक्त कवियों में दरिया साहब (बिहार वाले), दरिया साहब (मारवाड़ वाले) और यारी साहब प्रमुख हैं। दरिया साहब (बिहार) पीरनशाह के बेटे थे। किन्तु दरिया सागर के सम्पादक इस बात को नही मानते कि उनके माता-पिता मुसलमान थे।[9]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों का प्रपत्ति भाव

डॉ० मीनू अवस्थी

सहा० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, वाराणसी

www.shodh.net

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों ने अपनी भक्ति में प्रपत्ति भाव पर बहुत बल दिया है। भक्ति और प्रपत्ति में घनिष्ट सम्बन्ध है। भक्ति के प्रचलित पाँच रूपों - दास्य, सख्य, वात्सल्य, शांत और माधुर्य - में दास्य का विशिष्ट स्थान है। 'भगवान स्वामी हैं, मैं उनका सेवक हूँ' अन्य भक्त की इस अटलमति को 'दास्य' कहते है।[10] 'प्रपत्ति' (शरणागति) तथा 'प्रपन्न' (शरणागत) शब्द प्राचीन काल से ही संस्कृत ग्रंथों में प्रयुक्त होते रहे हैं। भगवान राम ने समुद्रतट पर वानरों से कहा था -जो एक बार भी शरण में आकर 'मैं तुम्हारा हूँ' ऐसा कहकर मुझसे रक्षा की प्रार्थना करता है, उसे मैं समस्त प्राणियों से अभय कर देता हूँ। यह मेरा सदा के लिए व्रत है -

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।

अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाभ्येतद व्रतं मम।।[11]

रामचरित मानस में भगवान् राम ने दास्यभाव के अद्भुत भक्त हनुमान को भक्त की जो परिभाषा बताई है, उसमें प्रपत्ति भाव ही है -

सो अनन्य जाके असि मति न टरइ हनुमंत।

मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत।।[12]

इस प्रकार भक्ति और प्रपत्ति में साम्य स्पष्ट है।

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों की भक्ति में प्रपत्ति का भाव अद्भुत है। आत्म निवेदन, शरणागति और प्रपत्ति प्राय: एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं । भक्त अपने आराध्य को आत्म समर्पण कर देता है।

दरिया साहब (बिहार वाले) इसी भाव से कहते हैं-

हौं सेवक जुग-जुगन तुम्हारा।

कृपा करहु जनि लावहु बारा।।[13]

परमात्मा ही सर्व सामर्थ्य स्वरूप है उसकी शरण में जाकर मनुष्य को सुख-शांति और सुरक्षा का अनुभव होता है। दरिया साहब (मारवाड़) कहते हैं जीव को केवल राम का ही भरोसा रखना चाहिए। राम की भक्ति से सब कुछ पूर्ण होता है-

राम भरोसा राखिये, ऊनित नहिं काई।

पूरन हारा पूरसी, कलपै मत भाई।।[14]

परमात्मा के सम्मुख अपनी लघुता और उसकी महानता का स्वीकार प्रपन्न भक्त का लक्षण है। अपने आराध्य का स्मरण करते-करते भक्त की ऐसी अवस्था आ जाती है, जब वह आराध्यमय हो जाता है, वह तन्मय हो जाता है। इस अवस्था की अनुभूति इन पंक्तियों में देखी जा सकती है-

किरपा कर हरि बोले बानी, तुम तो हौ मम दास।

दरिया कहै मेरे आतम भीतर, मेलौ रामभक्ति विस्वास।।[15]

यह पंक्तियाँ भक्त कवि की तन्मयता का प्रमाण है। प्रपत्ति में विश्वास ही भक्त का उद्धार करता है।

दास्य भक्ति का प्रमुख भाव है 'आत्म समर्पण'। दरिया साहब का यह भाव-

साहब मेरे राम हैं, मैं उनकी दासी।

जो बान्या सो बन रहा, आज्ञा अबिनासी।।[15]

-उनके 'आत्म समर्पण' को व्यक्त करता है।

आत्मसमर्पणकर्ता का मन सदैव अपने आराध्य पर टिका रहता है, इन्द्रियाँ आराध्य की ओर उन्मुख हो जाती हैं। समग्र सांसारिक संबंध 'राम' पर टिक जाते हैं। अनन्यता आराध्य के अतिरिक्त किसी और के लिए समय नहीं देती। अपनी ओर से स्वीकार की गई प्रपत्ति 'स्वगत स्वीकार प्रपत्ति ' है। भक्त इसको स्वीकार करता है किन्तु यह पूर्ण निरापद नहीं, काम, क्रोध, लोभ आदि की प्रबलता से यह प्रपत्ति भंग भी हो सकती है। शरणागति पूर्णत: 'निरापद' तभी होगी जब प्रभु स्वयं शरणागत को स्वीकार करते हैं। यह 'परगत स्वीकार प्रपत्ति'

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों का प्रपत्ति भाव

डॉ० मीनू अवस्थी

सहा० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, वाराणसी

www.shodh.net

है। कार्पण्य भाव 'अतिदीनता' यह प्रपत्ति की आत्मा है। अतिदीनता आराधक को आराध्य से जोड़ने का सबसे सुगम साधनापथ है। दरिया साहब की यह भावाभिव्यक्ति–

जौ धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मति हीना,
तुम तो हौ, सिरताज हमारा।[16]

उनके दैन्य का परिचायक है।

दरिया साहब कहते हैं कि उस परमबह्म राम के अलावा अब और कोई ठौर नहीं, जहाँ जाओ वहाँ काल मुख खोले खड़ा है, इस 'काल से' केवल राम ही निकाल सकते हैं –

राम बिना तो ठौर नही रे, जहँ जावै तहँ काल।
जन दरिया मन उलट जगत सूँ, अपना राम सम्हाल।।[17]

इन पंक्तियों का भाव है, लक्ष्य है केवल राम की शरणागति।

भक्त को जब यह लगता है प्रभु के अतिरिक्त उसकी रक्षा कोई और नही कर सकता तब वह केवल अपने आराध्य की शरण में रहता है उसकी प्रत्येक चेष्टा में उसके प्रभु की प्रसन्नता का अभीष्ट होता है। उसका भरोसा सर्वदा रहता है, उसके स्वामी उसके राम उसकी सर्वतोभावेन रक्षा करते हैं, वह अपना तन–मन राम को अर्पण कर देता है, फिर उसका बाल बाँका कौन कर सकता है–

आगे बढ़ै फिरै नहीं, यह सूरा की रीत।
तन मन अरपै राम को, सदा रहै अधजीत।।
सूर सदा है सनमुखी, मन में नाही संक।
आपा अरपै राम को, तो बाल न होवै बंक।।[18]

दरिया साहब (बिहार) भगवान् द्वारा अवतार लेने का हेतु यही स्वीकार करते हैं–

जोति ब्रह्मा बिस्नू प्रतिपाला।
जोति रूप धरि रहा गोपाला।।
जोति रूप जगत सब धरई।
जहाँ तहाँ दुष्टन सब दरई।।[19]

यारी साहब राम के अनन्य उपासक रहे। यारी साहब के भावों में– कबीर का सा साम्य दिखाई देता है। इनमें कबीर जैसी मस्ती का दर्शन होता है। प्रेम साधना और विरहानुभूति की पराकाष्ठा 'यारी साहब की रत्नावली' में देखने को मिलती है। दरिया साहब (बिहार) के आराध्य 'सत्पुरूष' उनके राम हैं। यारी साहब राम के साथ आत्मा के अभेदत्व को स्वीकार करते हैं। परमात्मा (राम) का एकत्त्व दो भिन्न वस्तुओं के सामान्य लक्षण नहीं, प्रत्युतपूर्ण एकत्त्व है। वह दो का एकत्त्व नहीं, तत्त्वत: एक का ही एकत्त्व है–

गहने के गढ़ै तैं कहीं सोनो भी जातु है,
सोनो बीच गहनो और गहनो बीच सोन है।
भीतर भी सोनो और बाहर भी सोन दीसै,
सोनो तो अचल अंत गहनो को मीच है।।
सोन को तो जानि लीजै गहनो बरबाद कीजै।
यारी एक सोनो ता में ऊँच कवन नीच है।।[20]

यह आत्म रति है, आदि पराभक्ति है और सत्य के साथ अनन्य हो जाना है।

इन प्रपन्न मुस्लिम राम भक्तों के लिए 'राम नाम धन' उनका सर्वस्व रहा–

दरिया प्रेमी आत्मा, राम नाम धन पाया।
निरधन था धनवंत हुआ, भूला घर आया।।[21]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों का प्रपत्ति भाव

डॉ० मीनू अवस्थी

सहा० प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, वाराणसी

www.shodh.net

उन्होंने स्वीकार किया-

आदि अंत मेरा है राम।

उन बिन और सकल बेकाम।।[22]

उनका यह दृढ़ विश्वास रहा, राम के बिना सब कुछ व्यर्थ है, बेकार है।

रीतिकालीन रामभक्त मुस्लिम कवियों की प्रपन्नता ने उन्हें अत्यन्त सरल बना दिया, वह सहज हो गये, मानवता के समीप हो गये, मानवता में उन्हें राम का दर्शन हुआ। यह रामभक्त कवि अपनी उदार दृष्टि के कारण समाज से जुड़े रहे सम्पूर्ण संसार को राममय देखने का इनका भाव मानवता की उपासना भी बना।

रीतिकालीन मुस्लिम रामभक्त कवियों में दरिया साहब (बिहार), दरिया साहब (मारवाड़) और यारी साहब अग्रगण्य हैं। भाव की चरमावस्था में इन्होंने जो कुछ लिखा, उसमें उत्कृष्ट भावाभिव्यंजना के साथ-साथ कलात्मक अभिव्यंजना भी है। भाषा में स्पष्टता है, प्रवाह है, प्रभाव है, फक्कड़पन है। उनकी शैली में उनके व्यक्तित्व की छाप है। शांत रस की गंगा है। प्रेम का अमृत है। 'प्रेम पिये सोई मस्त फकीरा'[23] प्रेम की मस्ती में मस्त इन भक्तों की वाणी को प्राप्त कर हिन्दी संसार धन्य हुआ है। भाषा के स्वरूप का निर्धारण करते हुए कहा जा सकता है वह सांकेतिक है, सरल है और सहज है।

अत: रीतिकालीन रामभक्त मुस्लिम कवियों की दास्य भावना उनका आत्म निवेदन उनकी प्रपत्ति जीवन को पवित्र बनाने वाली है। आज के अति संघर्ष और भागते हुए जीवन को विश्राम देने में समर्थ।

संदर्भ-

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ0 नागेन्द्र पृ0-370
2- 'दरिया सागर'- दरिया साहब कृत, एडिटर, संतबानी पुस्तकमाला, पृ0-1
3- 'दरिया सागर'- दरिया साहब, पृ0-7
4- संत काव्य, परशुराम चतुर्वेदी, पृ0-445
5- संत काव्य, परशुराम चतुर्वेदी, पृ0-446
6- हिन्दी के कवि और काव्य- सं0 गणेश प्रसाद द्विवेदी, पृ0-250
7- यारी साहब की रत्नावली, पृ0-1
8- संत काव्य, गणेश प्रसाद द्विवेदी, पृ0-395
9- 'दरिया सागर' - दरिया साहब कृत, पृ0-1
10- तुलसी दर्शन मीमांसा (जीव गोस्वामी कृत 'षट् संदर्भ') से उद्धृत, पृ0-305
11- वाल्मीकीय-रामायण, 6/18/33
12- रामचरित मानस, 3/11/11
13- 'दरिया सागर', पृ0-16
14- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-62
15- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-48
16- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-47
17- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-54
18- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-14
19- 'दरिया सागर', दरिया साहब, पृ0-2
20- यारी साहब की रत्नावली, पृ0-17
21- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-13
22- दरिया साहब (मारवाड़ वाले) की बानी, पृ0-48